>

Title: Regarding exodus of defence scientists from the country.

श्री महेन्द्रसिंह पी. चौहाण (साबरकांठा): महोदय, आपने मुझे देश के रक्षा वैज्ञानिकों के पलायन के संबंध में बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूं। यह बहुत गंभीर और चिंता का विषय है। हम सब जानते हैं कि विज्ञान और वैज्ञानिक देश की रीढ़ हैं, देश के विकास की धरोहर हैं। हमारे देश के वैज्ञानिक विशेषकर जिन्होंने रक्षा क्षेत्र में जीवन समर्पित किया है, दिन रात कड़ी मेहनत करते हैं। वे नए अविष्कार करते हैं जिससे देश की सुरक्षा कायम रहे और देश की आजादी पर कोई खतरा न आए। हमारे देश के लिए ये सभी वैज्ञानिक माननीय एवं गौरवपूर्ण हैं। रक्षा वैज्ञानिकों के शीर्षस्थ संगठन, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन, डीआरडीओ में विगत पांच वर्षों में कुल 650 वैज्ञानिक इस्तीफा देकर निजी क्षेत्र में शामिल हो गए हैं। यह बहुत चिंता का विषय है। रक्षा मंत्रालय के आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2007 में 273, 2008 में 162, 2009 में 65, 2010 में 63 तथा 2011 में 86 रक्षा वैज्ञानिकों ने सरकारी नौकरी से पलायन किया है।

महोदय, डीआरडीओ से पलायन करने वाले रक्षा वैज्ञानिकों ने अपनी इस स्थिति का कारण निजी मजबूरी बताई है। लेकिन वास्तविक सच्चाई निजी क्षेत्र का आकर्षण वेतन और सुविधाएं हैं जो वहां आसानी से मिल रही हैं। डीआरडीओ से इस्तीफा देने वाले ज्यादातर वैज्ञानिक ग्रेड बी के हैं। छठा वेतन आयोग लागू होने के बाद जिनका वेतन 45,000 से 50,000 रुपए के बीच है जबकि देश के अन्य सूचना एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्र में प्रति माह वेतन एक लाख रुपए से अधिक है। अतः ज्यादा वेतन का आकर्षण ही उनके पलायन की सच्ची वजह प्रतीत होती है। मैं आपके माध्यम से सरकार से अनुरोध करना चाहता हूं कि देश में बढ़ती हुई महंगाई को ध्यान में रखते हुए रक्षा वैज्ञानिकों को समुचित वेतन एवं सुविधाएं दी जाएं ताकि वे संतुष्ट होकर अच्छा काम करें और देश के विकास में सहयोग दें।